* आह *

सुधीर मौर्य ''सुधीर''

SAHITYA RATNALAYA
37/50, Shiwala Road,
Karipur - 208001.
(0512) - 235389 / 6455364

मुल्य : ₹ ८०
सस्करण : २०११
Aah (Poetry)
कॉपीराइट © सुधीर मौर्य ''सुधीर''

(१)

जुल्फ उड़ा कर मुखडे पर महफिल में वो आते हैं ।
चांद से दिलकश चेंहेरे पर नाहक [१] वो इतराते हैं ।

जबीं पे हुस्न का है गुरुर होठो के गुफ्तार तो देखो
भूल के प्यार गरीबों का गैर के संग इठलाते हैं ।

छोड़ के मेरे तन्हा दिल को चले गये वो चले गये
जाते ही उनके मेरे घर अब मौसम गम के आते हैं ।

कुछ और नही कुछ और नही एक काम यही बाकी है
हम उनकी यादों से यारों हर वक्त ये दिल बहलाते हैं

हम प्यार करे हम प्यार करे तुम ठुकराओ तुम ठुकराओ
एक दूजे को दुनियां वाले अब यही फसाना सुनाते हैं ।

१–व्यर्थ

(२)

न होते अगर तुम मस्जूद [१] मेरे हमे भी तुम्हारी परवाह न होती। जो नजरे इनायत फरमाते हम पे तो ज़ीस्त हमारी तबाह न होती ।

तुम्हारा एजाज [२] तुम्हारी शुजाअत का कायल है जमाना ये सारा, विभीषन को मिलती सुलतानी कैसे जो उस पर तुम्हारी निगाह न होती ।

खुर्शीदो [३] मह [४] को रोशन किया अता की बू गुलो को तुमने, नजरे करम जो न होती तुम्हारी दिन सुनहरे ओ राते स्याह न होती ।

कदम बोसी तेरी होते ही देखो पत्थर से हुई जनाना–ऐ–जाहिद [५] शबरी जगह कल्ब में कैसे पाती जो इसमे तुम्हारी चाह न होती ।

१–आराध्य, २–चमत्कार, ३–सूर्य, ४–चाँद
५–ऋषि पत्नी अहिल्या

लो फिर से तुम याद दिल को आ गये ।
आज ही हमने तुम्हे भुलाया था ।

इम्तिहॉ शौक से तुम जब्त [१] का मेरे लेना,
इस से पहले भी तुने हमको आजमाया था ।

ये जगह है वही तूँ गौर से देख तो ले,
कल सरे आम यही दिल मेरा दुखाया था ।

तुम पुकारो हम न आये ये हुआ ही नही,
हर दफा हमने किया वादा वो निभाया था ।

वो तेरा घर वो मंजर वो महफिल तेरी,
करके रूस्वा जहाँ मुझको ठुकराया था ।

शायद तुमको मेरी उल्फत न याद हो अब,
वफा का चर्चा मेरे अभी गैर ने सुनाया था ।

मेरे बीमारे दिल की कोई दवा दारू नही,
मुझको ये याद नही मैं कब मुस्कराया था ।

१–सब्र

ये किस की लगी हाय, हाय मेरे नजारो को,
फिरता बेघर होकर, सब खोकर प्यारो को ।

बढ़ता हुआ अब ये दर्द कोई तौर न कम होगा,
कहे एक से तूँ ये दर्द या बतलाये हजारो को ।

हर प्राणी वही काटे जो बोये वो करमो से,
जीवन जो हुआ पतझड़ क्यों कोसे बहारो को ।

तेरे अपने थे जो हाय तूने उनको न पहचाना,
अब ढूंढे तूँ कहॉ पगले उन अपने सहारो को ।

अंधियारो से क्यो घबराये तूने खुद ही शम्अ बुझाई,
तेरा वैरी उजाला है क्यों तकता सितारो को ।

कभी तो मेरे लिए तूँ कोई दुआ कर,
कभी तो मेरे सर पे आँचल से हवा कर ।

ओरो से वफा तेरी हर रोज मैने देखी,
कभी तो मेरे दिल से आके तूँ वफा कर ।

माना कि खता है ये छुप के किसी से मिलना,
मिल के मुझसे तन्हा इक बार ये खता कर ।

कायल हुआ हूँ तब से मैं इल्म [१] का तेरे,
महफिल में मुझको देखा सबकी नजर बचा कर ।

मैं देखूँ उसको ऐसे कोई देख भी न पाये,
मे शर्त उसनी रखी यूँ आँख दबा कर ।

ये किसने खलल डाला मेरी नींद में आकर,
मैं सोता हूँ आँखो में उसके ख्वाब सजा कर ।

१–ज्ञान

वो गली वो शहर वो आस्तां [१] जा के देख लिया,
किस्मत मे ही नही कि जुल्फे जनाना [२] असीर [३] हो ।

दिल पे कुछ जोर नही जो मुकाबिल परी–रु [४] हो,
लड़कपन हो जवां हो या फिर पीर [५] हो ।

वो महवशा [६] अव्वल है हूरे–बिलमा [७] से कहीं,
न हो करीब वो तो उसकी कोई तस्वीर हो,

मेरे मुकाबिल आने से जो कतराते हैं वो,
मेरी उनके घर जाने की कोई तदबीर वो,

कुछ गम न हो जो इश्क में शहीद हो जायें,
उन हिनाई हाथ मे जो कत्ल की शमशीर [८] हो ।

किस्मत में नही कि आगोश महबूबी मिले
काली हो, तुलसी हो कि ''सुधीर'' हो ।

१–घर, २–प्रेमिका के बाल,३–कैद, ४–परियो से चेहरे वाली,
५–वृद्ध, ६–चाँद से शरीर वाली, ७–परी, अप्सरा, ८–तलवार

पराये सर को समझते वो अहले किताब । [१]
मेरे जबीं [२] का दर्द हाय देखते नही ।

शहपुर [३] की महफिल मे वो रक्स–सराफा, [४]
गदा–ए–इश्क [५] के जानिब निहारते नही ।

महफिले गैर में वो मखमूर [६] इस कदर,
बिखरी लटे जुल्फ की सवांरते नही ।

इल्जाम मेरे सर पे वो हंगामो का देते,
खुद के गरेबां में कभी झांकते नही ।

१–पवित्र पुस्तक, २–मस्तक, ३–राजकुमार,
४–प्रत्येक अंग का नृत्य, ५–प्रेम का भिखारी,
६–नशे में होना

मुझसे जुदा नही है मेरे गुलशन की हालत,
खार [१] बांकी है शजर [२] में और गुलाब चले गये ।

अब तलक जख्म देते हैं वो रकीबे–हयात,
मेरी मय्यत पे आये आकर शिताब [३] चले गये ।

खुशियाँ आई तो कभी पल दो पल के लिए,
गम आये तो आते बे–हिसाब चल गये ।

तूँ क्या तेरा मजकूर [४] क्या नादान 'सुधीर'
एक से एक शख्स जहाँ से लाजवाब चले गये ।

कैसी आयी हवा न रही शर्मो हया बाकी
तंग पैरहन [५] हैं चेहरो से नकाब चले गये ।

१–कांटे, २–पेड़, ३–जल्दी, ४–चर्चा, ५–वस्त्र

खुदाया इस जहाँ में कोई मेरा गमख्वार [१] तो होता,
मुहब्बत न सही हमदर्दी का इकरार तो होता ।

न थे खुर्शीदो [२], मह [३], अख्तर [४] मेरी जीस्त के खतिर,
रोशन एक चिरागा या खुदा कभी मेरी मजार तो होता ।

मेरे मिट जाने का अफसोस खिजाओं न मनाया है,
मेरी बरबादियों का गम कोई दम फस्लेबहार तो होता ।

न मिजगा [५] का नसीब ऐसा करे वो दीद, लैला का,
महिमल [६] का ही आंखो को कभी दीदार तो होता ।

मुहब्बत नाम मिट जाने का सुना था दोस्तो से ये,
न होता मिटने का कोई गम वो वफाशे आर तो होता ।

बोसा [७] रुखसार के उसके उसका अनमोल तोहफा है,
बिठाता पलको मे उसको वो हमकनार तो होता ।

'सुधीर' दर्द उल्फत का जब्त हो ते कैसे हो,
न होता रुखे जमाल जो कोई साजागार तो होता ।

१–गम बांट ने वाला, २–सूरज, ३–चांद, ४–सितारे, ५–पलके,
६–ऊंट का हौदा जिसमे लैला बैठती थी, ७–चुम्बन

आज फिर तन्हाई बठी,
शायद आज फिर तुम बेवफा हुई ।

गले लगाकर गम को हम जी रहे हैं,
ऐसी भी क्या दिल से मेरे खता हुई ।

कहने की हजारो हमसफर मिले राह में,
हम न हुऐ किसी के जबसे तुम जुदा हुई ।

राह अपनी भी थी कभी उल्फत [१] से सजी हुई,
मिट गई हसरतें [२] जब से जुदाई की सजा हुई ।

काश बनते तुम मेरी राह के हमसफर,
सजाते दुनिया मेरी, तुमसे कहाँ ये अदा हुई ।

आज जिल्लत है, रुसवाई है, तेरी बेवफाई है,
और गम है शबो–सहर [३] जिनकी मुझसे वफा हुई ।

१–प्यार, २–इछाये, ३–रात–दिन

बयां कर न किस्सा–ए–दर्द यूँ जहाँ के आगे,
सितमगर जहाँ में तेरा कोई गमख्वार नही है ।

हर शनाशां [१] तेरा उसका है, आशना, [२]
ऐ गमर्गी दिल तेरा कोई गमगुसार नही है ।

मौत तूँ ही आ आकर लगा ले गले,
इस जिंदगी में मुझे अब करार नही है ।

अपने गुलशन के फूलों को रौनक नही,
एक वो नही तो कलियों मे निखार नही है ।

मुस्कराते है हम लुटा कर मुहब्बत में सब कुछ,
मेरे दिल सा मगर कहीं आजार [३] नही है ।

क्यों देता है 'सुधीर' रोज पैगामे वफा उनको,
उस संगदिल को तेरे गम से सरोकार नही है ।

अभी से थकने लगा सितमकश गम अदाई से,
हश्रे रोज [४] तलक मुझे सितम से इनकार नही है ।

१–परिचित, २–आशिक, ३–तकलीफ,
४–कयामत के दिन तक

मेरे हाथो से अब खुशियों का दामां छूटा,
मेरे अपनो ने मुझे सरे बाजार लूटा ।

रोशनी तारों की चुराती नजरे हैं,
बहारे रुठी है जबसे तूँ हमसे रुठा ।

इशारे उल्फत के करो न मेरे जानिब,
खबर क्या तुझको चाँद, मेरा दिल है टूटा ।

यकीं है उस पे सबको वो कितने बोले झूठ,
मेरे हर सच पे दुनिया मुझको कहती झूठा ।

मुहब्बत करके मिट जाना हमारी किस्मत ऐसी है,
तुम्हे हासिल न कर पाये तुम्हारी कीमत ऐसी है ।

अगर तुम मिल जाते हमको न रहता शिकवा दुनिया से,
अगर अब मिले न तुम हमको तो अपनी हालत ऐसी है ।

निभाई रस्मेवफा तुमने हमेशा दौलत वालो से,
हुई जो दरम्या दूरी तो अपनी गुरबत ऐसी है ।

न सीखा तुमने वफा का चलन मुहब्बत करने वालो से,
गिला क्या कर ओ हरजाई तुम्हारी फितरत ऐसी है ।

तुम्हे चाहेंगे हम मिटकर, तुम्हे पूजेंगे हम मरकर,
करे कैसे वफा रुसवा कि अपनी इबादत ऐसी है ।

हमको उनसे अब तक मुहब्बते क्यों है,
उनकी यादों से दिल को राहतें क्यो हैं ।

वो उनका क्या कसूर जो किए वादे पूरे न हुए,
फिर दरम्यां अपने यूँ अदावते [१] क्यों हैं ।

बाद उनके जो किसी से दिल लगा बैठे,
मेरे रहबर [२] से उनको ये रकावते [३] क्यो हैं ।

हमने आँखो में किसी ओर की जन्नते देखी,
मेरी सांसो को मगर उनकी जरुरतें क्यों हैं ।

चल 'सुधीर' चले फिर से उनकी महफिल में,
तेरे दिल में अब तलक वो नखवते [४] क्यों हैं ।

अपना तो है मुकद्दर अजल [५] से मुफालिस,[६]
मेरी तकदीर को फिर ये शिकायते क्यों हैं ।

१–लड़ाई, २–प्रेमिका, ३–दुश्मनी, ४–घमण्ड
५–सृष्टि का पहला दिन, ६–गरीब

सभी तो करीब है जाने पहचाने से उसे,
फकत [१] सरोकार नहीं मेरे वीराने से उसे ।

न सुनाओ किस्से उसकी बेवफाई के यारों,
कि भुलाया है मैने लाख बंहाने से उसे ।

उसके ख्वाबो ने मुझे रात को सोने न दिया,
कोई तो रोके मेरी नीद उडाने से उसे ।

सहारा जीने का बस है एक तस्वीर तेरी,
कोई हटाये न अब मेरे सिरहाने से उसे ।

मुझको न रास आये बात वो वाइज [२] की,
कि आते हुऐ देखा मैने मयखाने से उसे ।

उसको रकीब [३] की उल्फत पे है यकीन,
मैं भी तो चाहता हूँ इक जमाने से उसे ।

१–केवल , २–उपदेशक, ३–दुश्मन

उनकी दीद के दीदार को मेरे नैन तरसते है,
कि उनकी याद में मेरी आँख से अश्क बरसते है ।

दिल मेरा फिर से है बायबाँ [१] के दरम्या,
जिधर रखूं कदम बस खार [२] चुभते हैं ।

मिल जाये पलको को दीदार की झलक ,एक,
उसकी खातिर उनकी गलियों से गुजरते हैं ।

ये जो काली घटायें आई है घिर के ऊपर,
मेरे खातिर शायद वो अब तलक संवरते हैं ।

उजालों को समझ कर अंधेरा मूदता हूँ पलक,
ख्याबो में मेरे आकर वो यूँ हसंते हैं ।

अपनी मंजिल है कही दूर दरम्यां सेहराओं [३] के,
लुटा कर कारवाँ दिल का अब सफर को चलते हैं ।

१–जंगल, २–कांटे, ३–रेगिस्तान के बीच

न ढूंढो मुझे बीच जमानो के,
मै तो जिंदा हू दरम्या मयखानो के ।

मर ही जाता जो न होता सहारा साकी का,
बसर है जिंदगी मेरी बीच मयमानो के ।

लूट लिया मेरे अपनो ने मुझे लगा कर गले,
तन्हा मुझ छोड़ा था बीच तूफानो के ।

वो शहर जिस जगह बरबाद जिंदगी हुई थी,
आज फिर दिल है मेरा उसी निशानों के ।

वो जिनके कदमो में डाल दी दुनिया अपनी,
वो ख्वाहिशमन्द थे किसी ओर के शानो [१] के ।

ऐ खुदा तूँ खत्म कर दे अब ये जिंदगी मेरी,
है इन्तजार मुझे जाने का बीच शमनाानो के ।

१–काँघा

दो घड़ी भी चैन पा न सके,
ऐसी मुहब्बत से हासिल क्या है ।

जो डूबते हो बीच लहरो के भंवर में,
उनके दिल से पूछो कि साहिल [१] क्या है ।

लूट गया कारवाँ बीच राहो में जिनका,
उनके अश्को से पूछो कि मंजिल क्या है ।

एक दिन गये देखने हम भी मकतल [२] में यारो,
स्याह आँखो वाला वो कातिल क्या हैं ।

खुद घरौंदे में लगाके आग सोय थे हम,
देखने भीड़ आई वह गाफिल [३] क्या हैं ।

लिख दिया पत्थरो पर कितनी आसानी से,
चल के देंखें 'सुधीर' वो दिल क्या है ।

१–किनारा, २–कत्लगाह, ३–लापरवाह

शामे तन्हाई मे हमको तुम्हारी याद आती है,
तेरे प्यार की बाते हमें अब तक रुलाती है ।

तूँ गई तो जीस्त [१] के सब लुत्फ चले गये,
कि खाक मेरे बदन की अब हवा उड़ाती है ।

कोई देखे तो मंजर आँखो से अपनी ऐसा,
तेरे बाद अब मुझको तेरी तस्वीर सताती है ।

बतायें किस कदर यारो सदमें हम कीने [२] के,
उस फरेबिन्द [३] की हिकायत [४] फजा सुनाती है ।

१–जिंदगी, २–धोखे, ३–धोखे बाज, ४–कहानी

अजब करोबार है दयार [१] का तेरे,
सुलतानी [२] हो या दहकानी [३] सुकुने जिन्दगी नही ।

किताबेख्वा [४] हो या हो तूँ साहिबे किताब [५] ।
तूँ दाना [६] नही जो तुझमे खुदा की बन्दगी नही ।

रोशन चिराग करते ही तूफान आ गये,
मयस्सर मेरे घर को कोई रोशनी नही ।

मुस्कराकर हाल जो पूछा मेरे दिल का,
ये दिल्लगी थी उसकी कोई दिल लगी नही ।

वो चाँद वो शबनम [७] वो लाला–ए–सहर, [८]
कोइ नजारा उससे बढ़के दिलनशी नही ।

क्या करे लेके 'सुधीर' ये रौनक बज्म की,
महफिल मे जो गुफ्तार में वो महजबीं [९] नही ।

तुझे भुलने का मुझपे ये इलजाम है नाहक, [१०]
फकत कैस [११] किसी मे मुझ सी आशिकी नही ।

१–संसार, २–बादशाहत, ३–किसानी, ४–पुस्तक पढ़नेवाला,
५–पुस्तक लिखने वाला, ६–बुद्धिमान, ७–ओस,
८–सुबह का फूल, ९–चाँद से चेहरे वाली,
१०–व्यर्थ, ११–मजनू

कभी उस बेवफा से हो गया जो सामना यारो,
झटक कर जुल्फ शाने पे उसने पलके झुका ली हैं ।

खुदाया खैर करना उसको फिर जुस्तजू [१] मेरी,
बहारो ने गली मेरी लो फूलो से सजा ली है ।

मेरा वो ख्वाब था कोई या था एजाज [२] मलगो [३] का
मेरे सामने वो नाजनीं मह शब [४] में नहा ली है ।

भुलाये किस तरह मंजर जो देखा आँखो ने मेरी,
सरे महफिल कहारो ने जो उसकी डोली उठा ली है ।

पकड़ कर हाथ रकीबों [५] का चले इठला के वो ऐसे,
मेरे दिल मुफलिस [६] से उसने आँखे फिरा ली हैं ।

१–चाहत, २–चमत्कार, ३–साधू,
४–चांदनी रात, ५–दुश्मन, ६–गरीब

कभी तो तर्क – ए – ज़फा [१] कर ।
कभी तो जुल्फे मेहरबा कर ।

इतनी खफगी [२] न कर हमसे ।
कभी तो हमको राजदा [३] कर ।

वास्ते गैर ये आराइसे [४] तेरी,
कभी तो मेरे लिए पॉव हिना कर ।

तेरी सौदा तेरे दर पे पड़ा है,
कभी तो उस पे दस्तेसबा [५] कर ।

---

१ – बेवफाई छोड़ना, २ – नाराजगी, ३ – मित्र
४ – संवरना, ५ – हाथ से हवा करना

उसके शनासां [१] के कूंचे में ठिकाना किया,
दीदारे यार का हमने ये बहाना किया ।

ये वही शख्स है ऐ मेरे दोस्तो,
जिसके इश्क में दुश्मन जमाना किया ।

क्या घबराना उस सितम कश के सितम से,
मैने हर सितम उसका ताजे शहाना [२] किया ।

उसके दस्तेलम्स [३] के वास्ते ये तदबीर [४] की,
कू–ए–यार में जाकर भेस गदायाना [५] किया ।

---

१ – पहचान वाला, २ – शाही मुकुट,
३ – हाथ को छूना, ४ – उपाय, ५ – फकीर जैसा

मेरे नादान दिल दीदारे यार की कोशिशे न कर,
बहक के जाये संभल तू इतनी मय कशी [१] न कर ।

मैं खुद की चल पड़ा हूँ अपनी कब्र के जानिब,
ऐ जमाने तूँ मिटाने की मुझे साजिशे न कर ।

हुई गर कोई खता तो मैं मुजरिम हूँ तेरा,
मेरे जानिब तूँ यूँ निगाहे आतिशे न कर ।

मैने तो दी है दुआऐं अपने दिल से तुझको,
इस तरह तूँ भी सनम मुझसे रंजिशे न कर ।

वो तो शहजादी हैं हूरों सा कामत उनका,
दिले मुफलिस [२] मेरे यूँ उनकी ख्वाहिशे न करे ।

---

१ – शराब पीना, २ – गरीब दिल

तेरे इश्क में सितमगर कैसे अजाब देखे,
कांटो पे जबी रखे रोते गुलाब देखे ।

गैरो की बज्म में तुम बेरिदा ही झमके,
हमने तो रुख पे तेरे हरदम नकाब देखे ।

बनके रकीबे जाँ तुम उल्फत में मुस्कराये ।
मिटा के मुझको तुमने कैसे शवाब देखे ।

इश्क की बला से कोई बच न सका 'सुधीर',
इसके कहर से खाक में मिलते नवाब देखे ।

अक्से समा [१] नही परतवे खुरशीद [२] नही,
एक वो नही तो वो रोजे वो साल नहीं ।

माह [३] ओ अख्तर [४] पे वो स्याहे कहर ।
बिना उसके रंग – ए – गुल जमाल नही ।

महफिलो में अजारी मजलिसे बेनूर,
ऐसी आई खिजा कि कोई मिसाल नही ।

अच्छा हुआ हुई उनसे तर्के रफाकत [५],
अब करार है कि सर मे इश्के–बवाल नही ।

---

१ – चांद की चांदनी, २–सूरज की रोशनी, ३–चाँद
४ – सितारे, ५ – मित्रता की समाप्ति

खुदाया तेरी दुनिया में अय्यारी [१] मारती गर्दिश, [२]
तेरे बन्दो की बता दे तूँ उनका ठिकाना ।

अपने भी जफाजूं [३] है पराये भी जफाजूं है,
करुँ अपनो का मै शिकवा या गिला – ए – जमाना ।

कभी की भी मुहब्बत जिसने मेरे दिलो जिगर से,
वही मुझसे खफा है, आंखे का ताजियाना [४] ।

सहरा [५] की हरारत [६] पहले यूँ बुलन्द न थी,
मयस्सर हमे था जब वो पलको का शमियाना ।

गरदूं [७] तेरे दामन में तब यूँ बिजलियां न थी,
जुल्फो तले था उनके जब मेरा आशियाना ।

मेरे दरीचे [८] में सुबह आ जाती थी बहार,
न थे जब तलक वो गैंरो पे आशिकाना ।

दामन तेरा 'सुधीर' सदचाक इस तरह,
न हासिल हरम तुझे न महफिले मयखाना ।

करता कफस [९] में याद हर एक नफस [१०] के साथ,
तर्जेफुंगा पे तेरी वो बुल बुल का चहचहाना ।

१–चालकी, २–चक्कर काटना, ३–बेवफा, ४–क्रोध
५–रेगिस्तान, ६–गर्मी, ७–आसमान, ८–खिड़की
९–कैद, १०–सांस

शिकस्ता दिल, गरेबां चाक, अफसुर्दा [१] दहन [२] मेरा,
ठहरता कैसे मुकाबिल मैं अपने रकीबों के ।

मयस्सर [३] उसको महशब [४] हांसिल मुझ को स्याहरातें,
किसी की क्या खता इसमें ये खेल है नसीबो के ।

मेरे यारो करो न फिक्र मेरे दिलफिगार [५] की,
मेरे सदचाक [६] दिल का वश में नही है इलाज तबीबों के [७]

मयस्सर तुझको होगी दर से मेरे अश्को की माला,
ओर होता है क्या बोलो किस्मत में गरीबों के ।

खिजा में भी नजर आये बहारो की मुझे रौनक,
चलो पहनाऐ पावो में हम घुघंरु अंदलीबो [८] के ।

नजर आते ही दिलबर के मैं दिल से दू दुआ उसको,
कि मुहब्बत का चलन सीखा, मै ने यूँ अदीबो [९] से ।

नजर आ जाये परी-रु सुधीर तेरी हिकमत से,
कूचे में किया मैने ठिकाना उसके हबीबो [१०] के ।

१-बीमार, २-मुख, ३-प्राप्त होना, ४-चांदनी रात
५-कटा दिल, ६-सौ जगह कटा, ७-हकीम,
८-बुलबुल ९-शिक्षक, १०-दोस्त

उधर शबे शादी इधर मय्यत दोस्तो,
उसके सुर्ख जोड़े की न पूछो हिद्दत दोस्तो ।

बहारे मौसम न देखे कभी इश्क में,
सबा [१] को रही यूँ मुझसे कदूरत [२] दोस्तो ।

जीस्त [३] जीने, का सलीका न आया हमें,
मौत लायगी कुछ तो राहत दोस्तो ।

रंग तकदीर लाईं खिजाओ भरे,
दरम्या-खार [४] रही किस्मत दोस्तो ।

१-हवा, २-नफरत, ३-जिन्दगी, ४-कांटो के बीच

हुआ तो गुजर है शायद उसकी राहो में,
कुछ तो रकम [१] है मेरे कासिद की आँखो में ।

बाकी नही है कोई महक जिंदगी में अब,
एक उनकी खुश्बू अब तलक है मेरी सांसो में ।

होकर जुदा उनसे हुई बेख्वाब जिंदगी,
उनके ख्वाबो ने जगाया मुझको रांतो में ।

उस दिन से मेरे दस्त [२] को हांसिल नही है, कुछ,
जिस दिन हिना सजी थी उसके हांथो में ।

याद करके उन दिनो को गुजरे जिंदगी,
गुफ्तार [३] में, पड़ना वो खम [४] उसके गालो में ।

दामन नही पलके नही न वो छाँव–जुल्फो की,
सालो हुए बैठे मुझे उल्फत की छाँवों में ।

क्या चाँद क्या नर्गिस क्या कहकशाँ की बज्म [५],
इनसे बढ़के दिल कशी है उसके पावो में ।

१–लिखा, २–हाथ, ३–बात करना, ४–गड़ठा
५–सितारों की महफिल

कभी तो होगी मयस्सर [१] वो जिसकी है तलाश हमें,
कब तलक देखिये जिंदगी रखती है उदास हमे ।

मुझको फिर तेरी तमन्ना वहाँ पे लाई है,
सुहानी शाम मे तूं रखती थी जहाँ पास हमें ।

तूँ थी जिसने मुझे कल को ठुकराया था,
टूट के बिखरे यहाँ ये है एहसास हमें ।

वस्ल [२] के दिन तो गुजर गये हवा के झोंके से,
सदियो की शक्ल में जुदाई के लगे मास हमें ।

कितने खुश किस्मत वो जिनको हासिल लैला,
गुले मौसम न कभी आये है रास हमें ।

खबर ये तुझको नही, तूने किसे छोड़ दिया,
हो गई ओर की तूँ बना एक लाश हमें ।

१–प्राप्त होना, २–मिलन

दीवाना, सौदाई, आवारा, पागल,
तेरे इश्क में, मै क्या बन गया हूँ ।

ओ ढ़ाने वाले सितम मुझ पे सुन,
तेरे जुल्म की दास्तां बन गया हूँ ।

कैस [१] ओ फरहाद आये मेरे दीदार को ।
तेरी जफा से मैं मालमां बन गया हूँ ।

मेरे खून से लिखा तूने अपना फसाना,
बरबादियों का मै वो समा बन गया हूँ ।

१–मजनू

फूल पाने की ख्वाहिश में कांटे चुभें देखे ।
तेरे इश्क में हमने महीनो रतजगे देखे ।

फसाना दुशमनो को मेरे मुकम्मल [१] कैसे हो पाता,
अपनी आस्तीनो में, मैने अपने सगे देखे ।

ये कैसा प्यार था तेरा ये कैसी दोस्ती तेरी,
हजारो जख्म मैने अपनी दिल पर लगे देखे ।

उस दिन से मेरी दुनिया वीरान हो गई ।
जिस दिन तेरे दस्त हिना से सजे देखे ।

अंधेरे दूर करने की ये कोशिश नाकाम हो गई,
रोशन चराग करते ही हवाओसे बुझे देखे ।

उस दिन से हिरासा [२] हूँ जिस दिन से 'सुधीर'
उनकी किताब में रखे खत गैर के देखे।

१–पूर्ण, २–डर

जमाने में जो मिली न किसी को,
मेरी जिंदगी में सजा आ गई है ।

चारो तरफ हैं बहारो के मेले,
मेरे घर में बस खिजां आ गई है ।

सुबह से ही क्यो फूल मुरझा चले हैं
शायद शहर में बेवफा आ गई हैं ।

अंधेरो से मेरे क्यो घबरा रहे हो,
तेरी ज़ीस्त [१] मे तो शमाँ [२] आ गई है ।

---

१ – जिंदगी, २ – रोशनी

संवर जाती तकदीर मेरी भी यारों ।
जो बन जाते वो शरीके–हयात ।

भुला कर भी मैं भूला पाता नही हूँ ।
उनसे सावन की बारिश मे वो मुलाकात ।

वस्ल [१] ओ हिजर [२] का मैने देखा तमाशा,
तू हुई गैर मुझ को भूल कर जिस रात ।

सुधीर गैरो पे इल्जाम देने से पहले,
पढ़ना तूँ सीख अपनो के जज्बात ।

दुआओं में उसने मेरी मांगी थी मौत ।
यूँ सबात [३] जिदंगी हो गई बेसबात [४] ।

---

१ – मिलन, २ – जुदाई, ३ – स्थिर, ४ – अस्थिर

तेरी बेवफाई का रंजोगम है ,
तेरी याद मे मेरी चश्म [१] नम है ।

मेरे दिल में कैसा ये तूफान आया,
करु क्या कि मेरा रुठा सनम है ।

आजारी [२] बहुत मैने दुनियाँ में देखी,
नही जिसकी दवा ये ऐसा अलम [३] है ।

जुदा होके उनसे बहुत दर्द पाये,
ऊपर से तेरी याद, का ये सितम है ।

उनको ख्यालों मे क्यो तूं है लाता,
बड़ा ही 'सुधीर' वह बेरहम है ।

जो आ जाये वो मुस्करा कर के यारो,
बयबां भी मेरे लिए इक इरम [४] है ।

उसी के सहारे ये आती हैं सासें,
जिस बेवफा पे निकले ये दम है ।

---

१ – आँखे, २ – तकलीफें, ३ – रोग, ४ – जन्नत

सफीने छोड़े थे हमने हवा का रुख देख कर,
न जाने किस ओर से ये तूफान आ गये ।

ये अलम [१] ये रंजोगम ये तन्हाइयो का मेला,
बिन बुलाऐ मेरे घर ये मेहमान आ गये ।

फूलो को हांसिल करने की ख्वाहिश लिए हुए,
दरम्याने खार मेरे अरमान आ गये ।

दोराहे मे आकर खड़ा मै ढूढो रास्ता,
जिंदगी में मेरी यूँ इम्तिहान आ गये ।

संभालो मुल्क को 'सुधीर' ऐसे दहशत गर्दो से,
वतन में देने जो दहशत की अजान आ गये ।

---

१ – तकलीफ

महशब मे बाम पे उनसे प्यार हो तो कोई बात हो,
तन्हाई में उनका दीदार हो तो कोई बात हो ।

मैं अजल [१] से रहा उनके उश्शाकों [२] में,
कभी उनका भी इकरार हो तो कोई बात हो ।

वो क्या लुत्फे मुहब्बत जो आजमाइश न हो,
कैसे मांनिद मेरा सर संगसार [३] हो तो कोई बात हो ।

रफाकते शब [४] जेरी जीस्त [५] में आई बहुत,
शफक में उनका इसरार हो तो कोई बात हो ।

मैने किस निशात [६] से उनको बफाये पैगाम दिया ।
उनकी आँखो में इश्के निगार [७] हो तो कोई बात हो ।

१–सृष्टि का निर्माण, २–प्रेमी,
३–पत्थर से मारना, ४–मिलन की रात,
५–जिंदगी, ६–शान, ७–प्रेम की मूर्ति

ऐसे उजड़े कि शहर में कोई ठिकाना न रहा,
कूचे यार में अपना आशियाना न रहा ।

कोई रहजन [१] न था जिसने मुझको लूटा है,
मेरा सनम है वो जो अब मेरा दीवाना न रहा ।

खत्म होगी मेरी दिल की तसनगी [२] कैसे,
मेरे खातिर उनके हांथो में पैमाना न रहा ।

कैसे करुं यारब शौक–ए–मै कशी का अब,
उनकी आँखो की तरह कोई मयखाना न रहा ।

न रख हाज़त उनकी अपने दिल में 'सुधीर' ।
किसी का कर न गिला कि तेरा ये ज़माना न रहा ।

---

१ – चोर, २ – प्यास

ऐ नसीम [१] पीछे से मेरी जुल्फ को जुम्बिश न दें,
यूँ सताने की आदत तो मेरे यार की भी ।

ऐ सहरे सबा [२], रिदा से [३] मेरी गुप्तगू न कर,
यूँ ज़गाने की आदत तो मेरे यार की थी ।

ऐ अंदलीब [४] मेरे सहन में तूँ यूँ न गुनगना,
यूँ गाने की आदत तो मेरे यार की थी ।

परतवे मह [५] की मुझपे फिजाओ बारिशे न कर,
यूँ नहाने की आदत तो मेरे यार की थी ।

गुल–ए–मौसम न आ तूँ इठलाते हुऐ,
यूँ आने की आदत तो मेरे यार की थी ।

१–हवा, २–सुबह की हवा, ३–चादर,
४–बुलबुल ५–चांदनी

न बज्मे आराइयाँ [१] न जलसे शहनाइयाँ
एक तूँ न हुआ तो ये हाल हुआ है ।

दरो दीवार में गर्दिशे मारता फिराक [२],
खल्वतो [३] का कैसा यह साल हुआ है ।

कितनी हाजत है हमको उसकी चाहत की या रब,
इस रुखे दीदार का इक सवाल हुआ है ।

चश्मे बेनूर [४] चाक गरेबां ये नातवा बदन [५],
बरबादियों की 'सुधीर' अब मिसाल हुआ है ।

१–महफिलों की रौनक, २–जुदाई, ३–अकेलापन,
४–कमजोर आंखे, ५–कमजोर शरीर

जो जिंदगी में मेरी मज़बूरियाँ न होती,
तो दरम्याने अपने यूँ दूरियाँ न होती ।

ये शहर सारा तेरा कयोंकर होता आशिक,
इतनी सारी तुझमें जो खूबियाँ न होती ।

मौशिकी [१] ये क्या हैं मैं जान कैसे पाता,
रातो को जो खनकती तेरी चूड़ियाँ न होती ।

आता निखार कैसे 'सुधीर' तेर कारावां पे,
आंखो की उनकी बिखरी जो मस्तियाँ न होती ।

सहरा [२] की धूप में फिर कोई कैसे जाता,
बिरवरी जो जुल्फ की तेरी बदलियां न होती ।

१–संगीत, २–रेगिस्तान

जी में आता है जी का जियां [१] कर डाले,
आस्तां [२] पे उसके फिर से हम नजर डाले ।

जब भी गुजरे उनके दर पे आशिके मजमा देखा,
इतनी भीड़ मे कहाँ अब कैसे हम सर डाले ।

चश्म खूगर [३] है रात के स्याह अंधेरे की,
घर में पड़ाव मेरे देखो कब सहर [४] डाले ।

आयेगा पैगामे वफा कब उनके जानिब से,
देखिए कब तलक आह मेरी असर डाले ।

हम तो आदी है सहरा – ए – सफर धूप [५] के,
बोलिए फिर कहाँ साये अपने शज़र [६] डाले ।

१–नुकसान, २–घर, ३–अभ्यस्त, ४–सवेरा
५–रेगिस्तान की धूप की सफर, ६–पेड

बेख्याली मे कभी मेरा ख्याल आया होगा,
मेरी यादो ने कभी तो तुम्हे रुलाया होगा ।

अपनी जफा पे न शरमिन्दा हो सनम,
किसी ओर से हमने भी दिल लगाया होगा ।

जब कभी नींद में दिल तेरा बैचेन हुआ,
उस घडी गले हमने फिर से गम लगाया होगा ।

निभा न पाये कसम मयकशी [१] न करने की,
होके मजबूर मय [२] को लबो से लगाया होगा ।

मेरे ख्वाबों से कभी जो खुल गई आंखे तेरी,
किसी ने 'सुधीर' को सनम फिर से सताया होगा ।

१–शराब पीना, २–शराब

तड़प–तड़प के दिल तुझी को ढूंडे हमदम,
ओं मेरे मन को तूँ रुला के कहाँ चला गया ।

वो धोखे दुनिया भर के मेरी किस्मत में आये,
मैं जो भी कदम चला बस उस पे छला गया ।

कि तिनके प्यार के चुने थे कभी गुलशन से,
कि आया मौसम वो जो सब कुछ गला गया ।

मुहब्बत करके कोई क्या मिटता ऐसे है,
कि आया तूफां जो सब कुछ जला गया ।

कि सबने छोडे तीर निशाने तक तक के,
कि दुश्मन या हो दोस्त सभी का अब गिला गया ।

वो अपना था कोई जो बस के दिल में मैरे,
वो मेरी हस्ती को खाक में मिला गया ।

'सुधीर' को शिकवा है बहरो से न खिजा ओ से,
पतझड़ हो या सावन मुझको रुला गया ।

टूटते ही डाली से क्यों मुरझा जाते है फूल,
जुदा होकर माँ बाप से ये राज जाना है ।

चांदी की चमक चहिए न सोने की खनक चहिए,
बुज़र्गो के साये को हमने ताज जाना है ।

नही आता फरेब खाकर हमे मायूस हो जाना,
जफा-ए-प्यार [१] को जीस्त [२] का आगाज ३ जाना है ।

मेरे महबूब यकीन ला मेरी बुतपरस्ती पर,
मैंने अपने ख्याबो की तुझे मुमताज जाना है ।

फर्क अपने पराये का जो कल न जाना था,
तेरे रुख के उजाले में लो मैने आज जाना है,

उठा का फर्श से मुझको बिठाया हफ्ते अर्श [४] पर,
है राम तेरा अब मैने एज़ाज़ [५] जाना है ।

बहुत ही ठोकरे खाई तो मैने सीखा है चलना,
बहुत फरेब खाये तो जहाँ का रिवाज जाना है ।

१-मित्र की बेवफाई, २- जीवन, ३-प्रारम्भ,
४-सातवाँ आसमान, ५-चमत्कार

तेरे पहलू से बिछडकर ऐ नर्गिस-ए-मस्तान,
मेरे दिल को नसीब तेरा आँचल दुबारा न हुआ ।

आ कानपुर आ देख कैसे तेरे बिछडे रहते हैं,
तूँ भी रोता होगा जो वहाँ हम सा सितारा न हुआ ।

तेरी अय्यारी [१] के किस्से तेरे कूचे में रुसवा हैं,
तेरे असीरो [२] पे ये जुल्म तेरे कि कोई तुम्हारा न हुआ ।

'सुधीर' की जां अब रुखसत है तेरे बेदर्द दयार [३] से,
कि ये शहर तेरा है जो कभी हमारा न हुआ ।

---

१ - चालाकी, २ - कैदी, ३ - दुनियाँ

मेरी याद लेकर रात को आंख तो मूंद एक बार,
यकीन कर तेरी हर सुबह मेरे नाम से होगी ।

आंखे सूजी थी उसकी रात के इस पहर में यार
मेरे दीदार की प्यासी वो यकीनन शाम से होगी,

ढंग ये बात करने का निराला आंखो का उसकी,
सरे महफिल बची इकरारे इश्क के इल्जाम से होगी ।

सरे बाजार मेरा हाथ छुडाके उसका प्यार से कहना,
सनम ये प्यार की बांते कही आराम से होगी ।

अपने घर में खडा मुझे देख वो उसके हांफते आना,
मेरे दीदार के खातिर वो भाग के आई बाम [१] से होगी ।

मिला दे मुझको परमेश्वर मेरे महबूब से अब तो,
'सुधीर' पूरी तेरी हसरत अब बस राम [२] से होगी ।

बडा ही दिलकश था यारो उसकी आंखो का इठलाना,
अदा यें सीखी जरूर उसने शायद घनश्याम [३] से होगी ।

१–छत, २–राम भगवान, ३–कृष्ण

यकीनन तुझे याद आई होगी हमारी,
तूँ बयां न कर सकी ये तेरी हया [१] थी ।

बरबादियों का इल्जाम नाहक [२] तकदीर पे डाला,
चमन लूटा मेरा जिसने वो एक बेवफा थी ।

कोई तो रंग लायेगा तुझसे न मिलने का ये अज्म [३]
मेरे घर आके मिलेगी जो अलग तेरी रास्ता थी ।

खुदाया तेरी दुनिया में कैसा दस्तूर उल्फत का,
वही दुश्मन के सफ [४] में है कभी जो हमनवां थी ।

मेरी राहे मेरी दुनिया कहाँ मैं ढूढो अब इनको,
मेरे यारो यही सच है, मुहब्बत मेरी बेनिशा थी ।

१–लज्जा, २–व्यर्थ, ३–वादा, ४–कतार

हुऐ दीवाने तो बाय बाँ [१] क्या हो बहर [२] क्या हो,
हो सर पे कफन तो आबे ह्यात [३] क्या जहर क्या हो ।

वो तेरी वफा मुकम्मल [४] हुई तेरी जफा के साथ,
तेरे गम के मारो का बता अब गुजर क्या हो ।

आज तो सो लेने दे अपने पहलू मैं तूँ ।
क्या पता कल सुबह का मंजर क्या हो ।

की अंधेरो से दोस्ती जिसने तेरे बिछडने के बाद,
वास्ते उसके अब रात क्या हो सहर [५] क्या हो ।

मुँह फेर लिया बुरे वक्त में अपनो ने जब,
बरबादियों का मेरी फिर गैर को खबर क्या हो ।

जिसने देखा हो तुझे चांदनी रात में दमकते,
दुनिया की किसी शै पे उसकी नजर क्या हो ।

१–जंगल, २–समुन्द्र, ३–अमृत, ४–पूर्ण, ५–सवेरा

मैं देखता हूँ ख्वाब बस तेरे विसाल [१] का,
तूं नज्म मेरे दिल की, शेर मेरे ख्याल का ।

क्या रजोंगम है तुझको किस सोच मे हो डूबे
मैं हूँ जवाब हमदम तेरे हर सवाल का,

मेरे भी दिल में दर्द का तूफान है समाया,
कुछ तो ख्याल कर तूँ मेरे भी हाल का ।

आओ खुदा से मांगे दुनिया के लिए अम्न,
कुछ दर्द बांट ले गमे फर्दा निढाल [२] का ।

समझेगा ये दयार [३] इक दिन मेरा तराना,
इस्तकबाल [४] करे 'सुधीर' आओ ऐसे साल का ।

ऐ चांद महवशा [५] का हाल कुछ बता दे,
लेती है जुल्फे बोसा [६] क्या उसके गाल का ।

१–मिलन, २–भविष्य की चिंता, ३–दुनियाँ,
४–स्वागत, ५–चाँद से शरीर वाली, ६–चुंबन

अब न ठिकाना है अब न ठिकाना है,
जिंदगी की राह में जिंदगी की राह में ।

बस गम उठाना है बस गम उठाना है,
दर्द की आह में दर्द की आह में ।

लगे गम के डेरे लगे गम के डेरे,
मेरी निगाह में रे मेरी निगाह में ।

हमने चैन खोया रे हमने चैन खोया रे,
प्यार के गुनाह में प्यार के गुनाह में ।

काली रात आई रे काली रात आई रे,
डूबा जीवन स्याह मे डूबा जीनव स्याह में ।

किसी को अपना बना लो किसी के हो जाये,
किसी को दिल मे बसा ले किसी के खो जाये ।

किसी की आंखो में हम ख्वाब बहारो के सजाये ।
किसी के कंधे पे सर को टिका के सो जाये ।

उगे चारो तरफ फस्ले ईमा गुल [१] की यारो,
किसी के साथ मिलके ऐसा बीज वा जाये ।

मुहब्बत कर ले हम उनसे जो है ठुकराये गये,
किसी की आंखो से हम अपने अश्क [२] रो जाये ।

१–ईमान के फसल के फूल, २–आँसू

उसने जफा की इसका अफसोस नही,
हैप [१] तो ये कि वो बेवफा निकली ।

हमने जाना था उसे खूंबा [२] अपनी,
वो तो रकी बे राजदा निकली ।

यूँ संजीदा हुऐ लुत्फ–ए–इश्क मे हम,
क्या खबर कब अपनी जाँ निकली ।

तमाम उम्र मैने उससे की आशनाई,
कई ओर की वो शनसां [३] निकली ।

१–खेद, २–प्रेमिका, ३–परिचत

जाके वापस रफाकत [१] निभाने न आया,
वो वफाओं के नगमे सुनाने न आया ।

कुशिन्दे–आलम [२] के कूचे से गुजरे जो हम,
कोई मय्यत को मेरी उठाने न आया ।

महरुम ऐसे हुऐ लुत्फे इश्क से हम,
कोई जी को मेरे बहलाने न आया ।

अब न इश्क रही न खुमारियाँ रही,
हम नीमजदा [३] को कोई जगाने न आया ।

१–मित्रता, २–जहाँ को मारने वाला, ३–अर्द बेहोश

बिछड के शहर से अपने किसी से क्या गिला करना,
मेरा दर्द जो समझा तो एक रिज्वा [१] समझा ।

हुए बेहोश तो होश आया समझमें अपना दोष आया,
भरी महफिल में किसी गैर को जो मेहरबाँ समझा ।

मुफलिसो [२] की जुबा बन्दी का चलन तेरी महफिल में,
रकीबो [३] ने सरे महफिल मुझे यूँ बेजुबां समझा ।

तूतियों, अन्दलीबों [४] ने सहन में डाला है डेरा,
नही तूँ न सही चमन ने मेरा फलसफा समझा ।

पैर हन [५] लाल थे उसके मेरी मय्यत की रात में,
वही कातिल मेरा निकला जिस दिल राजदा [६] समझा

सहारे शानो के तेरे थे मानिन्दे आबगीनो [७] के
तेरे प्यार को हमाने उल्फत ए-जाविंदा [८] समझा ।

उसे ख्वाहिश भी सोने की उसे चाहत ती चांदीकी,
'सुधीर' खिरमन [९] से भी ज्यादा तुझे वो अरजा [१०] समझा।

१-स्वर्ग का दरोगा, २-गरीब, ३-दुश्मन, ४-बुलबुल
५-वस्त, ६-मित्र, ७-पानी के बुलबुल
८-अमर प्रेम, ९-घास, १०-बेकार

इक दिन हम मुहब्बत में तेरे काम आयेंगे,
मेरा नाम भी लिख ले तूँ अपने हम नशीनो [१] में ।

उन लाखो दिलनशी चेहरो मे इक तेरा चेहरा था,
मेरे दिल को जो भाया वो लाखों मह जबीनो [२] में ।

तरी ये चाल है कोई या है, मसरुफियत [३] तेरी,
मेरा दिलबर नजर आता है मुझको अब महीनो में ।

दीवाना इश्क ने तेरे मुझे ऐसे बनाया है,
फलक पे [४] ठूढो मैं तुझको कभी ढूढों जमीनो में ।

१-दोस्तो में, २-चान्द सा चेहरा,
३-व्यस्तता, ४-आकाश

अपनी अपनी किस्मत है अपना अपना अफसाना,
उनको मुबारक रात चाँदनी मुझे रास तीरगी [१] आई है ।

वाइज [२] कहाँ से लाऊं मै वो फितरत जाहिदाना [३],
तुझको मुबारक विसालेहरम मुझे रास मै कशी आई है ।

आते ही याद तुम्हारी सनम आँखो में पानी आता है,
किस मोड़ पे लेकर आज मुझे ये मेरी आशिकी आई है ।

इश्क करके मिट जाना काम है रांझा से जवां मर्दो का,
मुहब्बत में मंजरे आम वही मेरी कहानी आई है ।

दिल्लगी, दिल लगी का फर्क तुझसे दिल लगाकर जाना,
सरे महफिल शरीके गैर बनके जो वो दिल नशी आई है ।

१–कालीरात, २–उपदेशक, ३–सन्त

यूँ छाया खुमार तुझ पे चौदहवे साल का,
तू चौदहवी का चाँद है तारो के जाल का ।

ठहरेगी कैसे मुकाबिल मेरे रात ये अँधेरी,
मुझ पे पड़ा है साया तेरे रुखएजमाल का ।

ओ जाने वाले जा तूँ लेकर दुआये मेरी,
करना न दिल मे गम कुछ तूँ मेरे हाल का ।

घटाओं को देती मात उड़ती तुम्हारी जुल्फें,
महताब पे है भारी तिल तेरे गाल का ।

दीदार को तुम्हारी आई बज्म–कहकशां [१] की,
फरिश्तों के रुख से निकला अरक इनफआल [२] का ।

१–सितारों की महफिल, २–पसीने की बूंदे

ये जो बोझल लगती है आज आंखे तेरी,
तूने भी किया है शायद आज इश्क में रतज़गा,

भुले से भी इधर कदम न रखियो 'सुधीर' साहेब,
कि लखनऊ कानपुर शहरा हैं ज़ादूगरा ।

तेरे शहर से रुखसत हो गये खामोश रातो में ।
कि मज़नू सा भी होता हैं कही कोई सरगिरा ।

आज ही थी इम्तिहां की घडी सर्बो इश्क, इन्तिहा की,
आज ही सरे महफिल रकी बो से जा मिला मेरा राजंदा [१]।

आज ही अब्र [२] ने हटाया था मेरे सर से अपना साया,
आज ही न मेहरबा हुआ वो मेरा मेहरबां ।

---

१ – मित्र, २ – बादल

शब–ए–मह [१] में वो फिजाए–वस्ल, [२]
कि तमाम रात हम उनको देखा किऐ ।

वो दुश्मन–ए–शुमार [३] थे हम जिनके,
वही आज हमको राज़दां किए ।

अब्रो बाद [४] को भी यारो हया आ गई,
हंसी जुल्फो के साये यूं मेहरबां किए ।

आतिश –ए साइक [५] से हुई बन्द आँखे,
बर्क–ए–रुख [६] को यूँ बेपर्दा किये ।

हरारते शबनम के गौहर [७] से हुआ मालमां,
'सुधीर' मुफलिस को यूलं शहनशाह किये ।

१–चांदनीरात, २–मिलन का मौसम,
३–दुश्मनो की गिनती में, ४–घटाओं, ५–बिजली की चमक,
६–बिजली सा चेहरा, ७–जवाहारात

* परिचय *

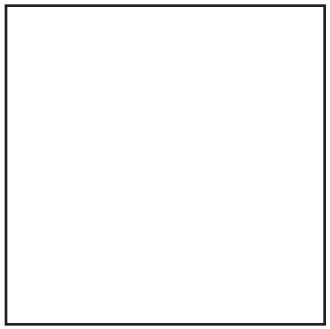

सुधीर मौर्य 'सुधीर'

जन्म : १ नवम्बर १९७९, कानपुर

शिक्षा : इंजीनियरिंग में डिप्लोमा एवं
मैनेजमेन्ट में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा.

संप्रति : इंजीनियरिंग कम्पनी में इन्जीनियर

संपर्क : ग्राम एवं पोस्ट गंज जलालाबाद
जनपद – उन्नाव (उ. प्र.)
पिन : २४११५०२
ई–मेल : sudheermaurya2010@gmail.com

पिताजी की आर्शीवाद
के साथ
पूज्यनीय माँ को
सादर सर्मिपत